वार्तालाप–537, फर्रूखाबाद (उ.प्र.), पार्ट–1, तारीख–19.3.08
Disc.CD N.537, dated 19.3.08 at Farrukhabad (Uttar Pradesh), Part-1

0.10–2.25
जिज्ञासु– बाबा, भक्ति की तो अजामिल बन पड़े।
बाबा– बच्चों के लिए बोला है। बच्चे ज्ञान में चल रहे हैं या तो ज्ञानी हैं या तो भक्त हैं। ज्ञानमार्ग जिंदाबाद होना है, भक्तिमार्ग मुर्दाबाद होना है। तो ज्ञान में चल पड़े तो भक्ति उड़ जानी चाहिए या रह जानी चाहिए? भक्ति के संस्कार तो उड़ जाने चाहिए। भक्ति कहा जाता है अंधश्रद्धा, अंधविष्वास को। जिन बातों का कोई आगा–पीछा नहीं है, कोई कारण–कार्य का विष्लेशण नहीं है ऐसे काम करना और दूसरों से कराना उसको कहा जाता है भक्ति और ज्ञान कहा जाता है समझ को। समझ अर्थात् कोई भी कार्य करे उसके कारण और कार्य का विश्लेशण होना चाहिए। अंधश्रद्धा में चलते रहने से और दूसरों को चलाते रहने से दुनियाँ नीचे गिरती जा रही है। भगवान की हज़ार नियामत मिली है बुद्धि और हर मनुष्य आत्मा को ये बुद्धि का वरदान मिला हुआ है नम्बरवार। ये बुद्धि का वरदान हरेक को यूज करना चाहिए। और अभी तो परमात्मा बाप आया हुआ है बुद्धि का दिव्य नेत्र, तीसरा नेत्र खोलने के लिए। तो जिनका–2 नेत्र खुलता जा रहा है उन्हें वो उस मनन–चिंतन–मंथन की स्टेज में आ जाना चाहिए। बिना विचारे, बिना सोचे–समझे, बिना ज्ञान की बातों से टैली किये कोई काम नहीं करना। अगर परम्परा के अनुसार करते हैं तो परम्पराओं से तो दुनिया नीचे गिरती चली आई। अभी तो नई दुनिया की परम्पराओं का, नई बातों का फाउन्ड़ेशन पड़ना चाहिए।

Time: 0.10-2.25
Student: Baba, someone became *Ajamil* (a great sinner) by doing *bhakti*.
Baba: It has been said for children. Children are following the path of knowledge. They are either knowledgeable or devotees. The path of knowledge is to be *zindabad* (long lived) and the path of *bhakti* is to be *murdabad* (to be brought down). So, when you have started following the path of knowledge, should *bhakti* vanish or should it remain? The *sanskars* of *bhakti* should vanish. Blindfaith is called *bhakti*. Performing tasks which are meaningless and unreasonable and making others do such tasks is called *bhakti,* and understanding is called knowledge. Understanding means whatever task is to be performed, it should be analysed on the basis of objects and reasons. The world has been experiencing downfall by following blindfaith and making others follow blindfaith. Intellect is a gift given by God and every human being has received this boon of intellect *numberwise* (according to their previous deeds). Everyone should use this boon of intellect. And now the Supreme Soul Father has come to open the divine eye, the third eye of the intellect. So, all those, whose eye (of intellect) has started opening, should come into a stage of thinking and churning. You should not do anything without proper judgement, without thinking, without tallying with the topics of knowledge. If you do it according to the tradition…, the world has been experiencing downfall because of traditions. Now the foundation of the traditions of the new world, foundation of new topics should be laid.

2.35–4.10
जिज्ञासु– बाबा ने कहा है, जो हूँ, जैसा हूँ, मेरे साथ रहनेवाले मुझे यथार्थ रीति नहीं जानते।
बाबा– ठीक है।
जिज्ञासु– तो यथार्थ रीति माना क्या और यथार्थ रीति जानना माना?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– यथा अर्थ। मैं जो हूँ, जैसा हूँ और जिस रूप में पार्ट बजाय रहा हूँ, उस पार्ट बजानेवाले के स्वरूप को, प्रैक्टिकल रूप में जो पार्ट बजाय रहा है उसको बच्चे नहीं पहचान पा रहे हैं बहुत से। ऐसे नहीं सब बच्चे ऐसे हैं लेकिन बहुत बच्चों की लिस्ट ऐसी है जो साथ रहने के बावजूद भी बाप के स्वरूप को नहीं पहचान पाते। नहीं पहचान पाते हैं तो उसकी निशानी क्या होगी? उसकी निशानी होगी अनिष्चय बुद्धि विनश्यते, छोड़ के चले जावेंगे। एक होते हैं अंत तक साथ निभानेवाले या नम्बरवार साथ निभानेवाले और एक होते हैं साथ न निभानेवाले। जितना ही अंत तक साथ निभानेवाले हैं उतना ही ज्यादा निश्चयबुद्धि की लिस्ट में हैं।

Time: 2.35-4.10

Student: Baba has said, 'even those who live with Me do not know Me accurately, as I am, what I am'.

Baba: It is correct.

Student: So, what is meant by accurately (*yathaarth reeti*) and what is the meaning of knowing accurately?

Baba: *Yatha arth (*accurately*)*. What I am, how I am and the form in which I am playing My part; the form of the one who is playing that part, the one who is playing the part in a practical form, many children are not able to recognize that. It is not that all the children are like this, but there is a list of many such children, who are unable to recognize the form of the Father despite living with Him. If they are unable to recognize Him, what will be its indication? Its indication would be 'those with a faithless intellect are destroyed; they will leave and go away'. One kind is of those who maintain [the relationship] till the end or those who maintain [the relationship] *numberwise* (according to their capacity) and one kind is those who do not maintain a [relationship]. The more they maintain the relationship till the end, the more they will be in the list of those with a faithful intellect (*nishchaybuddhi*).

4.15–4.55

जिज्ञासु– तुम देवी–देवताओं से और कोई सनातन हो न सके। सनातन माना क्या?

बाबा– पुराना। पाँच हजार वर्ष का ड्युरेशन है ड्रामा का। उसमें सबसे जास्ती पुराने ते पुराने पार्टधारी कौन है ? जो बाप के ड़ायरेक्ट बच्चे बनते है, वो पाँच हजार वर्ष के ड्रामा में ऑलराउन्ट पार्ट होने के कारण पुराने ते पुराने है, असल सनातन धर्म के है। सनातन माना ही पुराना।

Time: 4.15-4.55

Student: Nobody can be more *sanaatan* than you deities. What is meant by *sanaatan*?

Baba: Old. The duration of the drama is five thousand years. Who are the oldest actors in it? Those who become the direct children of the Father; because of playing an all-round part in the five thousand year old drama they are the oldest ones. They belong to the original *sanatan dharma* (Ancient Deity Religion). *Sanatan* itself means ancient.

5.00–8.15

जिज्ञासु– बाबा, हनुमान की...भक्ति का वरदान माँगा उनसे और रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के, उन्होने कहा मैं सौ जन्म भारतमाता की सेवा के लिये लेना चाहता हूँ। बाबा क्या वो भक्त हैं या ज्ञानी?

बाबा– वो भारतमाता किसी माता को कहते हैं या जमीन को कहते हैं?

जिज्ञासु– देश प्रेम की भावना को.......।

बाबा– हाँ–2, वो माता किसको कहते हैं? जमीन को माता कहा जाता है, जड़ जमीन को माता कहा जाता है या माता कोई चैतन्य है जिसके ऊपर फिदा होना है? ज्ञानी कोई भी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बात कहेगा तो समझकर के कहेगा। जब कहते हैं भारतमाता की जय हो, तो जय चैतन्य की होगी या जड़ की होगी? एक है भारतमाता और एक है जगतमाता। दोनों में कोई अंतर होगा या नहीं होगा? जगतमाता माना हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई सब उसको एड़म के साथ ईव के रूप में, आदम के साथ हव्वा के रूप में मानेंगे। चाहे हिन्दु हो, मुस्लमान हो, सिख हो, ईसाई हो सब उस जगतमाता को मानते हैं। लेकिन जगतमाता 500 करोड़ की माता है, जगत जननी है और भारतमाता सिर्फ भारतवासियों की माता है। जो आदि से अंत तक भारत में रहकर के पार्ट बजाते हैं।

Time: 5.00-8.15

Student: Baba, Hanuman….he sought the boon of *bhakti* (from Ram). And India's Ravindranath Tagore said: I want to take hundred births for the service of mother India. Baba is he a devotee (*bhakt*) or a knowledgeable person?

Baba: Do they consider a mother to be mother India or do they consider a land to be mother India?

Student: Patriotism…

Baba: Yes, yes. Whom do they call mother? Is the land called mother; is the non-living land called mother or is the mother a living one on whom we should sacrifice ourselves? Whatever a knowledgeable person says is on the basis of understanding. When it is said: 'victory to mother India' will it be the victory of a living person or of a non-living thing? One is mother India (*Bhaarat Mata*) and another one is world mother (*Jagatmata*). Will there be a difference between both of them or not? The World Mother means that Hindus, Muslims, Sikhs, Christians will believe her to be Eve along with Adam, Havva along with Aadam. Whether they are Hindus, Muslims, Sikhs, Christians, all of them believe her to be the world mother. But the world mother is a mother of 5 billions, mother of the world (*jagat janani*) and Mother India is the mother of just the the residents of India (*Bharatvasis*), who play a part living in *Bhaarat* from the beginning to the end.

जिज्ञासु– जो दावा करते है हनुमान जैसे सेवक है......... वो ज्ञानी है, देवता है या मनुष्य है?जो बार–2 भक्ति.....

बाबा– हनुमान हो या गणेश हो या कोई भी जानवरियत का भगवान का अवतार हो वो अवतार भगवान के अवतार हैं, ईश्वर के अवतार हैं या ऐसे ही भक्तिमार्ग में अंधश्रद्धापूर्वक ठोक दिये हैं? भगवान एक होगा या अनेक रूपधारी होगा? भगवान आयेगा तो भगवान के रूप में मनुष्यों को सुधारने के लिए आयेगा या जानवरों का रूप धारण कर के जानवर के रूप में आयेगा? अक्ल चलती नहीं है, बुद्धि चलती नहीं है तो अंधश्रद्धा, अंधविश्वास के आधार पर चलते हैं। उसको कहा ही जाता है भक्ति और भक्ति से होती आई दुर्गति ढ़ाई हजार साल से। भक्ति चलती है मनुष्य गुरूओं के द्वारा और भगवान ही एक ऐसा सद्गुरू है कि जब आता है तो ज्ञान को पंत कृंपाण को धारा ज्ञान की ऐसी कटार चलाता है, तलवार चलाता है, चलाना सिखाता है जो भक्ति का उच्छेदन हो जाता है।

Student: Those who challenge to be servants like Hanuman does…is he a knowledgeable person, a deity or a human being? Those who do *bhakti* again and again…

Baba: Whether it is Hanuman or Ganesh or any incarnation of God in animal form; are they incarnations of God, are they incarnations of *Ishwar* or have they been simply placed in the path of bhakti due to blindfaith? Is God one or does he have many forms? When God comes, will He come in the form of God to reform the human beings or will He take a form of animal and come? When the intellect, the brain does not work, they follow on the basis of blindfaith. That is called *bhakti* and *bhakti* has been bringing degradation for two thousand five hundred years. Bhakti is propagated by human gurus and only God is such a *Sadguru* that when He comes, '*gyaan ko panth kripaan ko dhara*' (the path of knowledge is equal to the sharpness of sword)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

He uses and teaches to use such a dagger [of knowledge], sword of knowledge that *bhakti* is removed.

8.18–10.28
जिज्ञासु– बाबा महावीर किसे कहते हैं? महावीर का पार्ट कौन बजाता है?
बाबा– महान वीरता का जो पार्ट बजाए वही महावीर।
जिज्ञासु– प्रत्यक्ष में कौन पार्ट बजाता है बाबा?
बाबा– शंकर का पार्ट ही महावीर का पार्ट है। जिसे जैनियों में कहते हैं महावीर। जैनियों ने 24 तीर्थंकर दे दिये हैं। वास्तव में है तो एक ही भगवान का अवतार। कीचड़ में रहकर के कमलफूल समान जीवन बितानेवाला ही महावीर है।
जिज्ञासु– भक्तिमार्ग में हनुमान क्यों कहते है महावीर को ....
बाबा– हनुमान कहते हैं, द्वापरयुग से हनुमान और गणेश की पूजा होती है। द्वापरयुग में भी जब उतरती कला हो जाती है तब हनुमान और गणेश का उदय होता है। जब भक्तिमार्ग का सात्विक स्टेज होता है उस समय गणेश और हनुमान जैसे जानवरियत वाले देवतायें नहीं होते। कलियुग आदि में, द्वापर के लास्ट में ऐसे देवताओं की उपासना बढ़ जाती है, देवियों की उपासना बढ़ जाती है, जानवरियत जैसे देवताओं की उपासना बढ़ जाती है। एक भगवान जिसे अव्यभिचार भक्ति कहा जाता है वो छूट जाती है। एक होता है अव्यभिचारी भक्ति, एक की उपासना और एक होती व्यभिचारी भक्ति अनेक की उपासना। वास्तव में न 24 अवतार है, न दशाअवतार है। भगवान के रूप में–2 माना और जानेवाला असली अवतार तो एक ही है जो भक्तिमार्ग के आदि में पूजा जाता था शिव और उसका साकार स्वरूप है शंकर। इसलिए 33 करोड़ देवताओं के बीच में शिव के साथ सिर्फ शंकर को ही जोड़ा जाता है। और किसी देवता को नहीं जोड़ा जाता। और देवताओं में भी महान देवता शंकर ही माना जाता है। इसलिए एक ही भगवान का असली स्वरूप है उसे ही महावीर कहा गया है।
Time: 8.18-10.28
Student: Baba who is called *Mahavir*? Who plays the part of *Mahavir*?
Baba: The one who plays the part of the bravest of all is *Mahavir*.
Student: Who plays a part of *Mahavir* in practice Baba?
Baba: Shankar's part is itself Mahavir's part, who is called Mahavir by Jains. Jains have 24 Tirthankars. Actually it is the incarnation of one God alone. The one, who leads a lotus-like life while living in mud, is called Mahavir.
Student: In the path of bhakti why is Hanuman said be Mahavir ….
Baba: He is called Hanuman… Hanuman and Ganesh are worshipped from the Copper Age onwards. Even in the Copper Age when the celestial degrees start to decrease, Hanuman and Ganesh emerge. When it is a *satvic* (pure) stage of the path of *bhakti*, there are no animal deities like Ganesh and Hanuman. In the beginning of the Iron Age and in the last period of the Copper Age, the worship of such deities increases; the worship of female deities increases; the worship of animal like deities increases. Worship of one God, which is called unadulterous *bhakti* stops. One is (*avyabhichari)* unadulterous *bhakti*, worship of one and the other is (*vyabhichari*) adulterous *bhakti*, i.e. worship of many. Actually, neither there are 24 incarnations nor there are ten incarnations (*dasha avatar*) (of God). The real incarnation who is the one known and believed as God is only one, i.e. Shiva, who used to be worshipped in the beginning of the path of bhakti, and his corporeal form is Shankar. This is why the name of only Shankar is suffixed to Shiva among 33 million deities. The name of no other deity is suffixed. And even among deities Shankar is considered to be the greatest deity. This is why there is only one true form of God. That form alone is called Mahavir.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

10.29–14.10
जिज्ञासु– बाबा वानप्रस्थ अवस्था साठ वर्ष में मानी जाती है।
बाबा– साठ और साठ वर्ष से ऊपर।
जिज्ञासु– बाबा दादा लेखराज की उम्र जो दिखाई गई है 1876 क्यों दिखाई गई है।
बाबा– 1876 भी दिखाई गई है और 1886 भी दिखा दी है और ज्ञानमृत पत्रिकाओं में ही दिखाई गई।
जिज्ञासु– अभी अठारह जनवरी का उनका जो लेख आया पत्रिकाओं में, पेपरों में उसमें 1876 दिखाई गई है।
बाबा– उनके दिखाने से बात चल जायेगी और जब पुरानी किताबें निकाली जायेंगी ज्ञानामृत पत्रिका की उसमें जो पुरानी–2 बहनों ने लिखा है, वो झूठ कर देंगे?
जिज्ञासु– वो भेद भाव कर रहे है उसी में।
बाबा– नहीं। भेदभाव, उनका खुद का ही तो लिखा हुआ है ज्ञानमृत पत्रिका उस समय की पुरानी। अगर कोई रिसर्च की जाती है तो पुरानी बात को ज्यादा मान्यता दी जाती है या नई बात को ज्यादा मान्यता दी जाती है? पुरानी। ओल्ड इज़ गोल्ड। तो पुरानी जो ज्ञानमृत पत्रिकाएँ है और जो त्रिमूर्ति पत्रिकायें है पुराने समय की, उसमें जो लिखा हुआ है दीदी–दादियों ने वो सात्विक लिखा होगा या अभी बाद में जो लिख रहे है वो ईर्ष्या, द्वेश से प्रभावित होकर लिख रहे हैं वो ज्यादा अच्छा होगा?
जिज्ञासु– पुरानी ।

Time: 10.29-14.10
Student: Baba, *vanprashtha* stage is believed to be from sixty years.
Baba: Sixty and above sixty years.
Student: Baba, Dada Lekhraj's age that has been shown, why is it shown to be 1876.
Baba: it has been shown to be 1876 as well as 1886 and it has been mentioned in the *Gyanamrit* magazines itself.
Student: Baba, now in their article that was published in their magazines and newspapers on the 18th of this January, it has been mentioned to be 1876.
Baba: Will it do if they show it [that way] and when the old books [issues] of the *Gyanamrit patrika* will be taken out, will the articles written by the old sisters turn out to be false?
Student: They are changing it (*bhed – bhav*) now.
Baba: No. Changing… they have written it themselves/ [in the old aritlcles]. The old *Gyanamrit* magazine of that time; if a research is done then is the older version given more importance or is the newer version given more importance? The older one. Old is gold. So, the old *Gyanamrit* magazines and the *Trimurty* magazines of the old time that contain articles written by Didi-Dadis; will they be pure or will the articles being written by them now under the influence of jealousy, malice be better?
Student said something.

बाबा– हाँ। दूसरी बात, मुरली में तो बोला हुआ है कि मुरली जो है वो कराची से निकलती चली आई है और मुरली चलती है, तो कैसे पता चलता है कि शिवबाप आया हुआ है? वाणी चली और मुरली बता रही है कि सन्, कराची में सन् 47 से मुरली निकलती चली आई; उससे पहले मुरली चलाते नहीं थे। 10–15 पेज लिखते थे ब्रह्माबाबा और बाप लिखाते थे। माने कोई बच्चे–बच्चियाँ थीं जिनमें प्रवेश होकर के शिवबाप लिखाने का काम करते थे और ब्रह्माबाबा बैठकर के लिखते थे। बाद में कराची में जब

संगठन इकट्ठा हो गया ऊँ मंड़ली कव, तब मुरली निकलना शुरू हुई। उससे पुरानी मुरली का कोई प्रुफ नहीं है। इससे साबित हो जाता है कि सन् 47 में ब्रह्माबाबा की ऐज़ 60 साल थी और 87 में 100 साल हो गई। तो सन् 87 में 100 साल हुई तो उसमें से 100 साल घटा दिये तो कितना आया? 1886–87 आया। तो झूठ तो झूठ ही, झूठ के पाँव नहीं होते। पाँव माना बुद्धिरूपी पाँव। झूठ जो है बिना बुद्धि लगाए बोला जाता है। एक तरफ झूठ बोलेंगे, दूसरी तरफ बुद्धि से पकड़ लिये जायेंगे।
जिज्ञासु– बेसिकवाले उम्र को छुपा रहे हैं, 1876 लिख दिया उन्होंने
बाबा– अब उनसे पुछा जाए मुरली में फिर ये क्यों लिखा है कि कराची से मुरली निकलती चली आई; पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। तो मुरली की बात ज्यादा पक्की होगी या मनुष्य गुरूओं ने जो ज्ञानामृत पत्रिकाओं में दो–दो बातें लिखी हुई हैं वो ज्यादा पक्की होंगी?

Baba: Yes, a second thing is that it has been said in the Murli that the Murlis have started [being narrated] since the days of Karachi. Moreover, when murli is narrated…, how do we know that the Father Shiv has come? Vani was narrated and the Murli says that Murlis started being narrated from the days of Karachi since (19)47. Earlier Murlis were not narrated. Brahma Baba used to write 10-15 pages and the Father used to make him write. It means that there were some children (male and female) in whom the Father Shiv used to enter and used to make them write and Brahma Baba used to sit and write it. Later on when the gathering of Om Mandali was formed in Karachi, then the Murlis began to be narrated. There is no proof of Murlis prior to that. It proves that Brahma Baba's age was 60 years in (19)47 and it was 100 years in (19)87. So, when the age was 100 years in (19)87, and if you deduct 100 years from that, which year do you arrive at? 1886-87. So, lies don't have legs (i.e. it is baseless). Leg means leg-like intellect. Lie is spoken without using the intellect. On the one side they speak lies and on the other side they will be caught through the intellect.
Student: Those who follow the basic knowledge are hiding the age….they have written it as 1876
Baba: Well, if they are asked why has it been written like this in the Murli that 'the Murlis began to be narrated from Karachi; earlier Baba did not used to narrate Murli'? So, will the version of Murli be more authentic or will the dualistic statements written by human gurus in *Gyanamrit* magazines be more authentic?

14.40–21.00
जिज्ञासु– बाबा भक्तिमार्ग में गायन है अंधे माता–पिता श्रवण पानी पिलाए, जल में लोटा डुबाना गजब हो गया, आगे गंगा बहे पीछे जमुना बहे, बीच त्रिवेणी का... यहाँ अंधे माता पिता और श्रवण कुमार का पार्ट बजानेवाली आत्मा कौन है?
बाबा– अंधे माता और अंधे पिता। शास्त्रों में जो पुराना शास्त्र है पुराणपंथी का जहाँ से ये सब गीत और कविताएँ आदि निकली है, उनमें लिखा हुआ है धृतराष्ट्र अंधे और गांधारी अंधी। दोंनो ही अंधे हो गये। तो दोंनो अंधे माता–पिता हो गये। वो तो शास्त्रों की बात हुई, लेकिन शास्त्रों में बाते कहाँ की लिखी हुई है? संगमयुग की ही बातें लिखी हुई है। ये संगमयुग में ही वास्तव में दोंनो प्रकार की बातें चलती है बाहर की दुनिया में और अंदर ब्राह्मणों की दुनिया में भी। बाहर की जो दुनिया है, दुनियावी तौर पर गाँधीजी हुए, कहते थे हम राम राज्य लायेंगे; लेकिन राम राज्य तो उन्होंने सिर्फ बंद आँखों से देखा। अपनी स्थूल आँखो से देख नहीं सके। अज्ञान के अंधे थे इसलिए रावण राज्य और ही जास्ती पुरजोर से स्थापित हो गया। वो बाहर की दुनिया की बात हुई। रिजल्ट ये हुआ कि गाँधीजी भारत देश का विभाजन करके चले गये। भारतमाता का बँटवारा कर दिया। ऐसे ही शास्त्रों में लिखा है गांधारी और धृतराष्ट्र दोंनो ने देश का विभाजन कर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दिया। खाण्ड़वप्रस्थ पाण्ड़वों को दे दिया और जो हास्तिनापुर का राज्य था वो दुर्योधन को दे दिया। दूर्योधन माना पाकिस्तान, युधिष्ठिर और पाण्ड़व माना हिन्दूस्तान। अब दो भाग जब हो जावेंगे तो लड़ाई निश्चित है या नहीं है? बाहर की दुनियाँ में भी हिन्दूस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई निश्चित है या नहीं है? निश्चित लड़ाई होगी। क्योंकि दो खंड़ कर दिये।

Time: 14.40-21.00

Student: Baba, it is famous in the path of bhakti, Shravan makes his blind parents drink water, disaster befell when he immersed the glass in water; the Ganga flows in front and the Jamuna flows behind, the Triveni in between[1] … Who are the souls playing the role of the blind parents and the Shravan Kumar here?

Baba: Blind mother and blind father. In one of the old scripture among the scriptures of the series of the Puranas, from which all these songs and poems have emerged, it is written that *Dhritrashtra* was blind and *Gandhari* was also blind (Parents of Kauravas in the epic Mahabharat). Both were blind. So, both were the blind parents. So, that is about the scriptures, but the topics written in the scriptures represent what time? The topics of the Confluence Age themselves have been written in the scriptures. Actually, these events happen in the Confluence Age itself in both ways, in the outside world as well as the inner world of Brahmins. In the outside world, in a wordly way, there was Gandhiji; he used to say he will establish kingdom of Ram, but he saw the kingdom of Ram only through closed eyes. He could not see (that kingdom) through his physical eyes. He was blind due to ignorance; this is why the kingdom of Ravan was established even more strongly. That is about the outside world. The result was that Gandhiji caused the division of the country India and departed. He caused the division of *Bhaaratmata* (mother India). Similarly it was written in the scriptures that *Gandhari* and *Dhritrashtra* caused the division of the country. They gave the *Khandavprastha* (the land that they later made into *Indraprastha*) to the *Pandavas*; and gave the kingdom of *Hastinapur* to *Duryodhan* (a vilainious character in the epic Mahabharata). *Duryodhan* means Pakistan and *Yudhishthir* and the Pandavas means Hindustan (India). Well, when it is divided into two parts, is a fight certain or not? Even in the outside world, is the war between India and Pakistan certain or not? There will certainly be a war because a partition took place.

ऐसे ही ब्राह्मणों की दुनिया में भी दो खंड़ हो गये– एक एड़वान्स पार्टी और दूसरी बेसिक पार्टी। एक है पाकिस्तानी, जहाँ मियाँ मुस्सर्रफ का राज्य चलता है। मुरली के महावाक्यों का राज्य नहीं चलता। देहधारी गुरू जो कह देंगे वो ही माना जायेगा और एक है एड़वान्स पार्टी जहाँ मुरली की बातों को छोटे–2 बच्चे भी उठा लेते है। भले इंचार्ज बहने कुछ भी कहती रहे, अपनी जबरदस्ती करती रहे लेकिन वो माननेवाले नहीं।

Similarly, in the world of Brahmins too, two parts emerged: one is Advance Party and the other is Basic party. One is *Pakistani* which is ruled by Miyan Musharraf. It is not ruled by the versions of Murli. Whatever is spoken by the bodily gurus is accepted and another one is Advance Party where even the small children grasp the versions of Murli. Though the incharge sisters may keep saying something, they may keep forcing them, but they will not accept.

तो रही बात श्रवणकुमार की। अब वो अंधा–अंधी का राज्य हुआ– दादा लेखराज और कुमारका दादी के रूप में, जिन्हें पता ही नहीं कि भगवान, गीता का भगवान वास्तव में कौन है? तो अंधे कहे जाये या सोझरे कहे जायें? अंधे। और उनसे पालना लेनेवाला कौन

[1] refers to a mythological story of Shravan Kumar and his blind parents

बना? जो बी.के. में से ही निकलते है। ऐसा पालना लेनेवाला बच्चा जिसका शास्त्रों में सबसे जास्ती श्रवण और गायन होता हैं। अरे, बेसिक की दुनिया में से ही सारे एड़वान्स में आये हैं कि बाहर से आये हैं? बेसिक से ही आये है। तो उस बेसिक की पढ़ाई में से, पढ़ाई पढ़नेवाले बच्चों में अव्वल नंबर बच्चा कौन हुआ? वो अपनी बुद्धि रूपी टोकरी में सबसे जास्ती उनको याद करता है–जिन्हें कहा जाता है ब्रह्मबाबा और टाईटल लेनेवाली जगदम्बा। जिन्होंने बेसिक में टाईटल लिया, किसका टाईटल लिया? ओमराधे का टाईटल लिया । किसने लिया? गांधारी ने लिया। तो दोंनो अंधे हो गये– माता भी अंधी और पिता भी अंध अंधा और बच्चा कौन हुआ? श्रवणकुमार। श्रवणकुमार माना क्या? कौनसी आत्मा?

जिज्ञासु– जगदीश भाई।

बाबा– जगदीश भाई नहीं। उन्होंने क्या जीतेजी भगवान बाप के पार्ट को पहचाना?

जिज्ञासु– रामवाली आत्मा।

बाबा– रामवाली आत्मा।

So, as regards Shravan Kumar. Well that is a kingdom of the blind ones in the form of Dada Lekhraj and Kumarka Dadi, who don’t know at all who God is, who the God of the Gita in reality is. So, will they be called blind or will they be called the ones with eyesight? Blind ones. And who is the one who receives sustenance from them, who emerges from among the BKs themselves? A child, who obtains such sustenance that he is heard and praised the most in the scriptures. Arey, have all the people in Advance (Party) emerged from the world of basic (knowledge) or from outside? They have emerged from basic (knowledge) itself. So, who is the number one child among the children who study that basic knowledge? He remembers the most in his basket-like intellect those who are called Brahma Baba and the title holder *Jagdamba* who obtained the title in basic knowledge. Whose title did she get? She took Om Radhey’s title [i.e. of Jagadamba]. Who took it? *Gandhari* took it. So, both are blind – the mother is blind as well as the father is blind. And who is the child? *Shravan Kumar*. What is meant by Shravan Kumar? Which soul is he?

Student: Jagdish bhai.

Baba: Not Jagdish bhai. Did he recognize the part of God the Father while being alive?

Student: The soul of Ram.

Baba: The soul of Ram.

21.03–21.22

जिज्ञासु– बाबा एक मुरली में बोला है रात को दस बजे सोना और चार बजे उठना है। तो ये किन बच्चों के लिये बोला गया?

बाबा– जो मध्यम पुरूषार्थ कर पा रहे हैं उन्हीं के लिये बोला गया। नहीं तो अव्वल नंबर जो बच्चे हैं वो तो नौ बजे तक सो जायेंगे और दो–तीन बजे उठ जायेंगे।

Time: 21.03-21.22

Student: Baba, it was said in a Murli: we should sleep at ten O’clock in the night and wake up at four O’clock. So, it has been said for which kind of children?

Baba: This has been said only for those who are able to make medium *purusharth* (spiritual efforts). Otherwise, the number one [category] children will go to bed by nine and wake up at two or three O’clock.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

21.26–21.55

जिज्ञासु– बाबा कुमारिका का अर्थ क्या है?

बाबा– कुमारका का अर्थ है कुमारी का। जैसे अमेरिका का अर्थ है–आ मेरे का? आओ मेरे हो क्या? ऐसे ही कुमारी का? अर्थात कुमारी हो क्या? माना कुमारी है नहीं लेकिन संसार समझता है कि कुमारी है।

Time: 21.26-21.55

Student: Baba, what is meant by *Kumarika*?

Baba: *Kumarika* means *Kumari Ka*. For example: the meaning of America is, *aa merey ka* (come, are you mine)? Come, do you belong to me? Similarly, *Kumari ka*, i.e. are you a *Kumari* (virgin)? It means that she isn't a Kumari but the world thinks that she is a Kumari.

22.00–24.00

जिज्ञासु– बाबा भक्ति से दुर्गति होती है कहते हैं ना फिर ये क्यों कहा है कि भक्ति करने से ज्ञान मिलता है, ज्ञान मिलने से भगवान बाप की पहचान मिलती है। तो भक्ति माना दुर्गति ये कैसे कहा गया?

बाबा– भक्ति माना भगवान बाप मिल जाए फिर भी अगर भक्ति करता रहे तो दुर्गति होगी या सदगति होगी?

जिज्ञासु– दुर्गति।

Time: 22.00-24.00

Student: Baba, it is said that *bhakti* leads to degradation (*durgati*). Then why has it been said that knowledge is received when we do bhakti, and when we receive knowledge, we receive the recognition of God, the Father. So, why has it been said that bhakti means degradation?

Baba: *Bhakti* meaning if someone continues to do *bhakti* even after finding God, the Father then will he undergo degradation or will he undergo salvation (*sadgati*)?

Student: [He will undergo] *durgati* (degradation).

बाबा– इसलिए कहा गया है। ज्ञान मिलने के बाद भी कोई भक्ति की बातों में लगा रहे, ज्ञान की बातों पर ध्यान न दे, भक्ति के आंड़म्बरों में ही बुद्धि लगाता रहे, पुरानी–2 जर्राजीर्ण परंपराओं को अपनाता रहे तो नीचे गिरेगा या समाज को ऊँचा उठाने के निमित्त बनेगा या बनायेगा, क्या बनेगा? नीचे गिरेगा और दूसरों को नीचे गिरायेगा। इसलिए भक्ति दुर्गति है और ज्ञान सदगति है। शास्त्रों में भी लिखा है ''रिते ज्ञानान्मुक्ति'' बिना ज्ञान के मुक्ति और जीवनमुक्ति नहीं मिल सकती। ऐसे नहीं लिखा है वैराग्य से मुक्ति या सन्यासियों को मुक्ति मिलती है या निर्वाणधाम के वासी हो जाते हैं। वाणी से परे इस दुनिया में कोई जा ही नहीं सकता। अगर वाणी से परे कोई ढ़ाई हजार साल में गया होता तो दुनिया की आबादी कम होनी चाहिए या बढ़नी चाहिए? कम होनी चाहिए। एक भी वानप्रस्थी नहीं बना। सब इसी दुनिया में जन्म–मरण के चक्र में आते रहते है क्योंकि किसी में ज्ञान ही नहीं है। सब अज्ञान के अंधे है, भटकते रहते हैं। ठिकाना नहीं मिलता बुद्धि को, भगवान कौन है और कहाँ है और कैसे पार्ट बजाता है, क्या करता है?

Baba: This is why it has been said so. If someone remains busy in the concepts of *bhakti* even after receiving knowledge, if he does not pay attention to the topics of knowledge, if he keeps himself busy in the rituals of *bhakti*, if he continues to adopt the old, outdated ancient traditions, then will he experience downfall or will he become or make others an instrument in causing the rise of the society? What will he become? He will experience downfall and also cause the downfall of others. This is why bhakti is *durgati* and knowledge is *sadgati*. It was also written in the scriptures: *ritey gyanaana mukti*. *Mukti* (liberation) and *jeevanmukti* (liberation in life)

cannot be attained without knowledge. It was not written that liberation is obtained through *vairagya* (detachment) or that the sanyasis attain liberation or that they become the residents of the abode of silence (*nirvaandhaam*). Nobody can go beyond speech in this world at all. Had anyone gone beyond the speech in two thousand five hundred years, then should the population of the world decrease or should it increase? It should decrease. Not even a single person has become *vaanprasthi* (the stage beyond speech). Everyone keeps passing through the cycle of birth and death because nobody has knowledge at all. Everyone is blind due to ignorance; they keep wandering. The intellect does not find its destination: who is God and where is He and how does He play His part; what does He do.

24.02–26.00
जिज्ञासु– बाबा शंकर को तांड़व नृत्य करते हुए दिखाया गया है। इसका मतलब क्या है?
बाबा– हाँ जी।
जिज्ञासु– इसका मतलब क्या?
बाबा– ताड़ माना क्या है? ताड़ माना पिटाई। तांड़व माना पिटाई करनेवाला, ड़ान्स माना ज्ञान ड़ान्स। माना कैसा ज्ञान ड़ान्स किया? एक–2 आत्मा में जो कमजोरियाँ भरी हुई है, जन्म–जन्मान्तर के भक्तिमार्ग के संस्कार भरे हुए हैं, श्रीमत के बरखिलाफ चलने के संस्कार भरे हुए हैं, आसुरों को फॉलो करने के संस्कार भरे हुए हैं, विधर्मी और विदेशियों को फॉलो करने के संस्कार भरे हुए हैं, दिखावा के संस्कार भरे हुए हैं, उन संस्कारों को नाश करने के लिए शंकर के द्वारा तांड़व नृत्य किया जाता है। ऐसी–2 ज्ञान के प्वॉइन्टस् उठा–2 के सुनाते हैं जो उन्हें ड़ंड़े की तरह लगते हैं, जैसे घाव हो जाता है। उनको शास्त्रों में बताया है बाण, ज्ञान तलवार, ज्ञान के बाण, ज्ञान के डंडे। ब्रह्मा के द्वारा जो वाणी सुनाई गई वो ज्ञान के डंडे नहीं अनुभव होते, ज्ञान के बाण नहीं अनुभव होते जो घाव कर दे, घायल कर दे किसी को। ज्ञान की कटारी या तलवार अनुभव नहीं होती; जो कोई का देहभान बिल्कुल कट जाये। सर अलग हो जाये और देहभान रूपी धड़ अलग हो जाये। लेकिन शंकर का ज्ञान ड़ान्स ऐसा है जो सारी दुनिया के देहभान को खलास कर देनेवाला है।

Time: 24.02-26.00
Student: Baba, Shankar has been shown to be performing the *Tandav* dance. What does it mean?
Baba: Yes.
Student: What does it mean?
Baba: What is meant by *Taar*? *Taar* means beating. *Taandav* means someone who beats. Dance means the dance of knowledge. It means, what kind of dance of knowledge did he perform? Shankar performs the Tandav dance to destroy the weaknesses present in every soul, the *sanskars* of *bhaktimarg* that are recorded for many births, the sanskars of acting against the *shrimat* that are recorded, the *sanskars* of following the demons that are recorded, the *sanskars* of following the *vidharmis* and *videshis* that are recorded, the *sanskars* of showing off that are recorded. He picks up and narrates such points of knowledge that hit them like sticks; it is as if they are injured. They have been described in the scriptures as arrows, the sword of knowledge, the arrows of knowledge, the sticks of knowledge. The versions that were spoken by Brahma are not felt like the sticks of knowledge, arrows of knowledge which injure someone. It is not felt like the axe or sword of knowledge which removes the body consciousness completely, separates the head and the torso of body consciousness completely. But such is the dance of knowledge of Shankar that it removes the body consciousness of the entire world.

26.12–27.58
जिज्ञासु– बाबा राम कृष्ण के लिये बताया बाबा ने कि वो नल–नील हैं। नल और नील राम कृष्ण की आत्मायें हैं।
बाबा– हाँ, जी।
जिज्ञासु– लेकिन भक्ति में लिखा है कि नल और नील जब पत्थर ड़ालते थे समुद्र में वो तैरते थे और जब राम ने ड़ाला तो वो डूब गया।
बाबा– अरे, राम जो भक्तिमार्ग में कहा गया है वो राम कोई देहधारी था या निराकार था? कृष्ण जिसे भक्तिमार्ग में कहा गया है वो कृष्ण भगवान निराकार शिव है या कोई साकार शरीरधारी है? कौन है? साकार शरीरधारी को उन्होंने भगवान मान लिया है लेकिन ज्ञान में हमारी समझ में बात आ गई कि गीता में जिस भगवान की बात कही गई है वो निराकार है या साकार है? निराकार शिव है। ऐसे ही रामायण में जिस भगवान की बात कही गई है वो भगवान निराकार शिव है या कोई दशरथ का बेटा है? निराकार शिव है। तो निराकार शिव उनके हाथ से पत्थर तैराने की बात नहीं है। किसके द्वारा पत्थर तैराने की बात है? जो राम–कृष्ण की आत्मायें हैं उनमें एक है नल और एक है नील। निशोत काला। वो दो बंदर हैं। उन विशेष दो बंदरों के बुद्धिरूपी हाथों से जो चैतन्य पत्थर तैराये जाते हैं, चैतन्य पत्थर बुद्धि रूपी आत्मायें ज्ञान सागर में तैराई जाती हैं उनसे वो ज्ञानरत्नों का पुल तैयार होता है। ये उसका अर्थ है।
Time: 26.12-27.58
Student: Baba, it has been said by Baba about Ram and Krishna that they are Nal & Neel (two monkeys from epic Ramayana who helped Ram build the bridge on the ocean between India and Lanka). Nal and Neel are the souls of Ram and Krishna.
Baba: Yes.
Student: But it has been written in *bhakti* that when Nal and Neel used to put stones into the ocean they used to float and when Ram put it, they sank.
Baba: Arey, was the Ram who was mentioned in the path of *bhakti* a bodily being or the incorporeal one? The one who was known as Krishna in the path of *bhakti,* is that God Krishna the incorporeal Shiv or a corporeal being? Who is he? They have considered the bodily being to be God, but we have understood in knowledge whether the God mentioned in the Gita is incorporeal or corporeal. He is incorporeal Shiv. Similarly, is the God mentioned in Ramayana incorporeal God Shiv or the son of Dashrath? He is incorporeal Shiv. So, there is no question of making the stones float at the hands of incorporeal Shiv. It is about making the stones float through whom? Among the souls of Ram and Krishna, one is Nal and another is Neel. Nishot Kala (very black) They are two monkeys. The bridge of gems of knowledge is built with the living stones which are made to float, the living souls with a stone like intellect which are made to float in the ocean of knowledge through the hand-like intellect of those two special monkeys. This is its meaning.

37.10–39.35
जिज्ञासु– बाबा कुमारियाँ बंधनमुक्त होती हैं। सभी कुमारियाँ सोने की जंजीर में फंसी हुई हैं ऐसा क्यों बोला है?
बाबा– कुमारी जीवन जो है वो कलियुग के अंत में जो भारतीय परम्परायें चल रही हैं वर्तमान में राजनीतिक तौर पर। राजनैतिक के तरफ से कुमारियों को पूरा संरक्षण मिला हुआ है। जो भी 18 साल की कुमारियाँ हो गई हैं वो स्वतंत्र रूप से कहीं भी जाकर के अपना जीवन बीताए सकती हैं। न माँ–बाप का उनको कोई बंधन है, न कोई दूसरे संबंधी का बंधन उनको ड़ाला जा सकता है। सिर्फ उनका अपना मन कन्ट्रोल में होना चाहिए।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

मन किसी के बंधन में न हो, कोई देहधारी के बंधन में फंसा हुआ न हो और ज्ञान में आने के बाद अगर आपस में एक–दूसरे से लगाव लग जाता है; कोई भाई से लगाव लग जाए या कोई बहन से लगाव लग जाए तो उसे कहेंगे सोने की जंजीर। तो सोने की जंजीर तोड़ना और बड़ा मुश्किल होता है। लौकिक दुनिया की जंजीरें हैं लोहे की जंजीर। और ब्राह्मणों की दुनिया में आकर के ब्राह्मणों में आपस में एक–दूसरे से फंस जाना और मुरली की बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं देना। मनुष्य जैसे चलाये, मनुष्य संगी–साथी जैसे चलाए उनके आधार पर चलने लग पड़ना। तो उसको कहते है बंधनवाली कुमारी। सोने की जंजीर में बंध गई। लोहे की जंजीर तोड़ना फिर भी सहज है क्योंकि कानूनी नियम बना हुआ है कि माँ–बाप या कोई भी लौकिक संबंधी कुमारी को बंधन नहीं ड़ाल सकते। वो जहाँ कहीं चाहे वहाँ चली जाये। कुमारियाँ निंबंधन होती है। मातायें तो एग्रीमेन्ट किया हुआ है कोई न कोई पुरूष के साथ। वो बंधन में बांधी हुई हैं। जब तक पुरूष उनको परमिशन न दे लिखित रूप में तब तक वो इधर–उधर अपना जीवनयापन नहीं कर सकती। कुमारियों को ऐसा कोई भी बंधन नहीं है।

Time: 37.10-39.35

Student: Baba, *kumaris* (virgins) are free from bondages. Why is it said that all the *Kumaris* are entangled in the chains of gold?

Baba: As regards the *kumari* life; in the end of the Iron Age, according to the present Indian traditions from a political point of view, kumaris have been given complete protection from a political point of view. All the kumaris who have reached the age of 18 years can go anywhere and lead an independent life. Neither are they under the bondage of the parents, nor can the bondage of some other relative bind them. The only requirement is that their mind should be under their control. The mind should not be in anyone's bondage, it should not be entangled in the bondage of any bodily being; and after entering the path of knowledge if they develop attachment for each other, if there is attachment for some brother or some sister, it will be called a golden chain. So, it is a more difficult to break that golden chain. The chains of the *lokik* world are iron chains and if brahmins are entangled in each other after entering the world of brahmins and if they do not pay special attention to the versions of Murli, if they start following whatever way the human beings want them to follow, whatever way the human beings and their companions want them to follow, then they will be called bonded kumaris. They have become bound in golden chains. It is easier to break the iron chains anyway because there is a legal rule that the parents or any worldly relatives cannot subject the virgins to bondage. She can go wherever she wants. Kumaris are free. Mothers indeed have entered into an agreement with one or the other man. They are bound in bondage. Until the men give them permission in written form, they cannot spend their life here and there. Kumaris are not under any such bondage.

44.06–46.05

जिज्ञासु– अभी अव्यक्त वाणी में बोला गुल्जार दादी ने आत्मा और परमात्मा दोनों को समाने का कार्य अच्छा किया।

बाबा– आत्मा–परमात्मा को समाने का कार्य किया? गुल्जार दादी सिर्फ हद में ही है या बेहद में भी है? एक तो है हद की नॉलेज, बेसिक नॉलेज और एक होती है बेहद की नॉलेज। कौनसी? एड़वान्स नॉलेज। एड़वान्स नॉलेज में भी दीदी–दादियाँ है या सिर्फ बेसिक में ही दीदी–दादियाँ है? एड़वान्स नॉलज में भी कोई गुले–गुल्जार करनेवाली कोई दादी है। जिसके लिए कहते कि दाना खाक में मिलकर गुले–गुल्जार होता है। दाना जब तक मिट्ठी में न मिलाए जाए, दाना जब तक खाक में न मिले तब तक गुलशन तैयार नहीं होता, बाग–बगीचा तैयार नहीं होता। गुलशन का पौधा तब बनेगा जब कोई बीज अपने को खाक में मिला दे। वो रूद्रमाला की आत्मायें हैं जो अपने अस्तित्व को खाक में

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

मिला देती हैं और अपना लक्ष्य पूरा करती हैं। उनमें से जो अव्वल नंबर है उसका नाम दिया गया है गुल्जार। वो हद की प्रवेषता है और यह बेहद की प्रवेषता है। जो कोई की भी बुद्धि को चेन्ज कर सकती है।

Time: 44.06-46.05

Student: Now it has been said in an Avyakt Vani that Gulzar Dadi has played the part of accommodating the soul and the Supreme Soul well.

Baba: She performed the task of accommodating the soul and the Supreme Soul. Is Gulzar Dadi only in a limited sense or is she there in an unlimited sense too? One is the knowledge in a limited sense, the basic knowledge and another one is the unlimited knowledge. Which one? Advance knowledge. Are there Didi-Dadis in the advance knowledge also or are there Didi-Dadis just in basic knowledge? In the advance knowledge as well there is a Dadi who makes the garden of flowers (*gule-gulzar*) for which it is said that 'd*ana khaak me milkar guley gulzar hota hai*' (the seed merges itself with the soil to create the garden of flowers). Until the seed is mixed with the soil, until the seed merges with the ash (i.e. soil) the garden doesn't become ready; a garden is not made. Plants will grow in the garden only when the seed mixes itself with the soil. It is the souls of *Rudramala* which merge their existence in the soil and fulfil their aim. The number one among them is named Gulzar. That is entrance in a limited sense and this is entrance in an unlimited sense which can change anybody's intellect.

47.20–50.20

जिज्ञासु– बाबा वो कहना चाहती हैं कि असाधारण जन्म माना एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म किसे कहेंगे और पहला जन्म किसे कहेंगे?

बाबा– एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म कहा जाता है जैसे ब्रह्मा बाबा का एक जन्म हुआ ज्ञान में और एक जन्म जो हुआ है वो 1886 से लेकर के 1986 तक गिना गया – 100 साल ब्रह्मा की आयु। दादा लेखराज ब्रह्मा। उसमें 47 से लेकर के 68 तक उन्होंने ज्ञान में प्रत्यक्ष होकर के कार्य किया माना 60 साल की वानप्रस्थी अवस्था में शिव ने प्रवेष किया और 69 में शरीर छोड़ दिया। तो टोटल मिलाकर के 100 साल आयु तो नहीं हुई। उसमें सन् 87 का पीरियड़ और मिलाया जाए तो 100 साल हो जाता है। तो जो सूक्ष्म शरीर से उनका एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी शरीर गिना जायेगा। लेकिन वो तो ब्रह्माबाबा जैसी आत्माओं की बात हुई। प्रजापिता वाली जैसी आत्मायें जो हैं वो सन् 36 से जन्म लिया, बेहद का दिव्य जन्म प्रजापिता ने उस समय आयु थी 60 साल। वो 60 साल में 84 वाँ जन्म उनका शुरू हुआ और उसकी समाप्ति हुई जाकर के जब 100 ब्रह्मा की आयु हो जाती है। कौनसे सन् में? 76 में। सन् 76 तक उनका 84 वाँ जन्म हुआ प्रजापिता का। 76 के बाद जो भी सन् 36 तक शरीर चलता है वो एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म है, पहला जन्म भी है नई सृष्टि रूपी रंगमंच का और एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म भी है।

Time: 47.20-50.20

Student: Baba, she wants to ask: which is the extraordinary birth and which is the first birth?

Baba: Extraordinary birth means: For example, one birth of Brahma Baba is in knowledge and one birth is counted from 1886 to 1986, 100 years age of Brahma, Dada Lekhraj Brahma. He played a direct role in knowledge from (19)47 to (19)68, i.e. Shiv entered in the vanprasthi stage, i.e. when he was 60 years old and He left the body in (19)69. So, the total age is not 100 years. If the period upto (19)87 is added to it, then it becomes 100 years. So, through the subtle body it will be considered to be his extraordinary body. But that is about the souls like Brahma Baba. The souls like Prajapita, took birth in (19)36, the divine birth in an unlimited sense. At that time his age was 60 years. His 84th birth began at 60 years age and it ended when he attained the age of 100 years. In which year? In (19)76. Until (19)76, it was the 84th birth of Prajapita.

The body that exists from (19)76 to (20)36 is the extraordinary birth. It is the first birth of the new world stage as well as the extraordinary birth.

जिज्ञासु–.........आत्माओं को कैसे लागू होता है?
बाबा– जैसे प्रजापिता को लागू होता है ऐसे और आत्माओं को भी जो एड़वान्स में आती हैं उनके लिए भी लागू होता है। जब से उनको अपने स्वरूप का साक्षात्कार हो जाये कि मैं आत्मा 33 करोड़ देवताओं में से कौनसा विशेष पार्ट बजानेवाली हूँ? तभी से उनका एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म शुरू हो जाता है। एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म माना पहला जन्म। 21 जन्मों में से पहला जन्म।
Student:.......How is it applicable to the other souls?
Baba: Just as it is applicable to Prajapita, similarly it is applicable to other souls who enter the advance knowledge. Their extraordinary birth begins from the time they have the vision of their own form which special part do I, the soul play among the (33 crore) 330 million deities? . Extra ordinary birth means the first birth. The first birth among the 21 births.

51.40–53.15
जिज्ञासु– बाबा, बीस वर्ष पहले 88–89 में रामायण सीरियल आई थी जिसमें राम का गुणगान किया गया था। अभी पुनः 2008–09 में आ रही है; ज्ञान में इसका कोई संबंध है?
बाबा– हूबहू रिपिटेशन नहीं होता है? 88–89 में त्रेतायुगी शूटिंग पूरी हुई या नहीं हुई एड़वान्स पार्टी के हिसाब से?
जिज्ञासु– हुई बाबा।
बाबा– तो एड़वान्स के हिसाब त्रेतायुगी शूटिंग पूरी हुई माना शुटींग पीरियड़ में राम का जो विशेष काल गाया हुआ है वो समाप्त हुआ और रामायण सीरियल शुरू हो गया। ऐसे ही यहाँ भी अब बीच में जो 89 से लेकर 99 और 99 से लेकर 2009, क्या? ये 20 साल व्यतीत हो गये। अब वो फिर चक्र शुरू हो रहा है। जो रामवाली आत्मा है उसमें कृष्णवाली आत्मा भी विराजमान है। अंतिम स्टेज ऐसी होती है कि रामवाली आत्मा कृष्णवाली आत्मा के ऊपर सवार हो जाती है। जो शास्त्रों मे दिखाते हैं शंकर ने बैल पर सवारी की तो दोंनो मिलकर के अव्यक्त बापदादा एक साबित हो जाते है। उनका काल चलता है। फिर रामायण सीरियल शुरू हुआ। अच्छा तो है।
Time: 51.40-53.15
Student: Baba, the Ramayana (TV) serial in which Ram is glorified was telecasted twenty years ago in (19)88-89. . Now it is being telecasted once again in 2008-09; does it have any connection with knowledge?
Baba: Does an exact repetition not take place? From the point of view of advance party did the Silver Age shooting complete in (19)88-89 or not?
Student: It was completed Baba.
Baba: So, from the point of view of advance (party) the Silver Age shooting was completed, i.e. the special period of Ram within the shooting period ended and the serial Ramayana began. Similarly, from (19)89 to (19)99 and from (19)99 to 2009; what? These 20 years have passed. Now that cycle is starting again. The soul of Krishna is also present in [the body of] the soul of Ram . Such is the last stage that the soul of Ram rides over [controls] the soul of Krishna, which is shown in the scriptures that Shankar rode on a bull. So, both Avyakt Bap Dada unite together and are proved to be one. Their period goes on. Then the serial Ramayana has started once again. It is good.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

–55.20
जिज्ञासु– बाबा वो कहना चाहते हैं कि बाबा तो पतित से पावन बनानेवाले हैं। वो पतित से पावन बनाने के तरीके कौनसे है?
बाबा– पतित से पावन बनने का वही तरीका होगा जो पावन से पतित बनने का तरीका है। सिर्फ अंतर ये है कि पतित से पावन बनने के लिए जो तरीका अपनाया जाता है वो तरीका है एक से पतित से पावन बनते है, क्या? व्यभिचार से पतित से पावन बनेंगे या अव्यभिचार से पतित से पावन बनेंगे? अव्यभिचार से पतित से पावन बनेंगे और द्वापरयुग से व्यभिचार शुरू होता है। अनेको से संग के रंग से पावन आत्मायें जो देवतायें थे वो पतित बन गये। संग के रंग में आकर के पतित बने या बिना संग के रंग में आकर के पतित बने? पतितों के संग के रंग में आने से, व्यभिचारियों बनने से पावन से पतित बन गये। पावन देवतायें थे फिर अनेको के संग के रंग में आये तो पतित बन गये। अब वही प्रोसिज़र कर के फिर अपनाया जाये। उसके लिए ये जरूरी है कि एक को पहचानें, उस एक पावन, जो एवरप्योर है उसको पहचान कर उसके संग के रंग से फिर पतित से पावन बनें। और कोई दूसरा तरीका नहीं है।
Time: 53.34-55.20
Student: Baba, he wants to say that Baba is purifier of the sinful ones. What is the method of purification of the sinful ones?
Baba: The method of purification of the sinful ones will be the same as the method of changing from pure ones to sinful ones. The only difference is that the method that is adopted to change from sinful ones to pure ones is that you change from sinful ones to pure ones through the One; what? Will you change from sinful ones to pure ones through adultery or through unadultery? You will change from sinful ones to pure ones through unadultery and adultery begins from the Copper Age. The pure souls who were deities became sinful by coming into the color of the company of many. Did they become sinful by by coming into the color of the company of many or did they become sinful without being coloured by company? They changed from pure ones to sinful ones by coming into the color of the company of sinful ones and by becoming adulterous. They were pure deities and then they became sinful by coming in the company of many. Now the same procedure is to be adopted in an opposite manner. For that it is necessary that we recognise the ‘One’, the Everpure One and after recognizing Him, we should change from sinful ones to pure ones by being coloured in His company. There is no other way.
……………………………………………………………………………………………
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info